बक्सर जिला में कृषि समस्या एवं समाधान : एक भौगोलिक अध्ययन

प्रो0 शिव कुमार सिंह*
रवि शंकर तिवारी*

परिचयः—बक्सर, बिहार राज्य का एक कृषि प्रधान जिला है तथा कृषि इस जिले के अर्थ तंत्र की धुरी है। वस्तुतः इस जिले में कृषि न केवल एक आर्थिक क्रिया है बल्कि यहाँ के लोगों की जीवन शैली भी है। इसी संदर्भ को देखते हुए ''बक्सर जिला में कृषि समस्या एवं समाधान : एक भौगोलिक अध्ययन'' शोध पत्र का विमोचन कर रहा हूँ। ताकि कृषि से कृषक को अधिक से अधिक लाभ मिल सकें। इस जिले में खाद्य फसलों तथा सब्जियों की खेती की जाती है।

विधि तंत्र और आँकड़ेः—प्रस्तुत शोध विश्लेषणात्मक है। इसमें मुख्यतः प्रथम तथा द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है जो जिला गजेटियर, जिला जनगणना रिकार्ड, संबंधित पुस्तकें, समाचारपत्रों और प्रकाशित स्त्रोतों से भी संदर्भित है।

शोध का उद्देश्यः—शोध का मुख्य उद्देश्य निम्नांकित है—

(i) कृषि के समस्या से किसानों तथा सरकार को अवगत कराना।
(ii) कृषि के समस्या से निपटने के उपाय को बताना।
(iii) कृषक को अधिकतर उपज तथा मुनाफा के बारे में बताना।
(iv) कृषि के आधुनिकीकरण से अवगत कराना।
(v) किसानों को जागरूक बनाना।
(vi) कृषि से संबंधि सरकारी लाभ से कृषक को अवगत कराना इत्यादि।

भौगोलिक स्थितिः—बक्सर, बिहार राज्य के दक्षिण—पश्चिम में स्थित एक महत्वपूर्ण जिला है। जहाँ अधिकतर लोगों का जीवन निर्वाह कृषि से होता है। यहाँ की कुल जनसंख्या 17,06,352 व्यक्ति है, जो 1,703 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल में निवास करते हैं। 25016′ से 25045′ उत्तरी अक्षांश तथा 83048′ से 84023′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।

***सेवानिवृत्त, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (भोजपुर)**
***शोधार्थी (नेट/जेआरएफ), भूगोल विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (भोजपुर)**

17 मार्च 1991 को बक्सर जिला अस्तित्व में आया। इससे पूर्व यह पुराना शाहाबाद और भोजपुर का हिस्सा था। इस जिले में 2 अनुमण्डल तथा 11 प्रखण्ड हैं तथा पाँच नदियाँ बहती हैं।

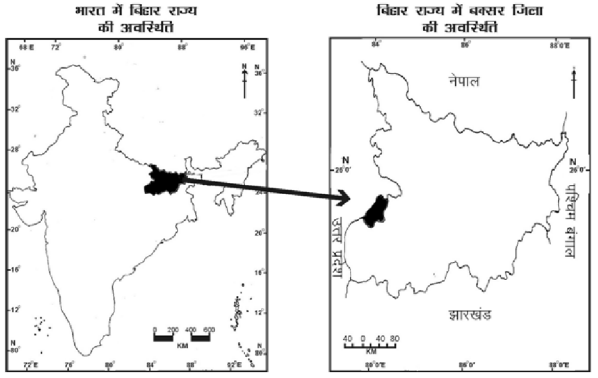

बक्सर जिला की अवस्थिति

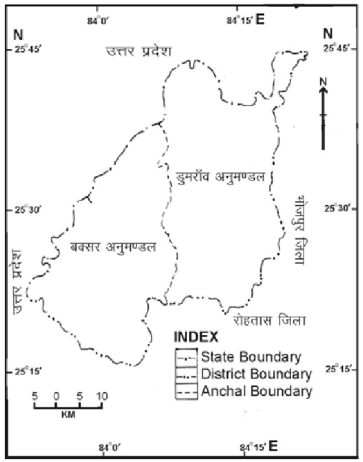

भूगर्भिक संरचनाः—हिमालय की उत्पत्ति के बाद, चतुर्थ कल्प में गंगा नदी की जगह एक गहरी भ्रश घाटी थी जिसमें उत्तर एवं दक्षिण से आकर मिलने वाली नदियाँ मलबा गिराती थीं। लाखों वर्षों के बाद गंगा — जमुना समतल मैदान का निर्माण हुआ, इसी मैदान में स्थित है बक्सर जिला। यह मैदानी भाग मध्य कालीन अवसादी निक्षेप से निर्मित है। यह एक आकृति विहीन मैदान है। जिसका निर्माण गंगा और इसकी सहायक नदियों द्वारा लायी गई मिट्टियों से हुआ है। भूगर्भिक दृष्टि से बक्सर जिला का महत्व कम है, किन्तु यह कृषि और मानवाधिवास की दृष्टि से इस प्रदेश का सर्वप्रमुख स्थान है।बक्सर जिला का पूरा क्षेत्र मैदानी है। गंगा नदी के

समीपवर्ती क्षेत्र जो बक्सर, सिमरी, चक्की तथा ब्रह्मपुर प्रखण्ड के उत्तर दिशा में गंगा नदी का छाड़न झील स्थित है। जहाँ खादर में अधिकतर सब्जियों की खेती की जाती है वहीं रेलवे लाईन का दक्षिणी भाग बांगर कहलाता है।

स्थलाकृतिः—बक्सर जिला सोन—कर्मनाशा दोआब में आता है, जिसका निर्माण सोन एवं कर्मनाशा के अलावा क्षेत्र से होकर बहने वाली नदियों में धर्मावती, कॉव, छेर, ठोरा आदि नदियों के द्वारा लाई गई मिट्टियों से हुआ है, इसलिए यह मैदान समतल तथा उपजाऊ है जो कासो प्रदेश का भाग है।बक्सर जिला का पूरा क्षेत्र मैदानी है। पूरे क्षेत्र में कहीं भी पठार या पहाड़ नहीं पाया जाता है। इस जिले के बीच से हावड़ा—दिल्ली रेलवे मार्ग गुजरता है जिसके उत्तर में बाढ़ प्रभावित इलाका तथा दक्षिण में सूखा प्रभावित क्षेत्र रहता है जिसके कारण यह इलाका हमेशा दोनों समस्याओं से जूझता रहता है।

मिट्टी :—चट्टानों के टूटने—फूटने तथा उनमें भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन के फलस्वरूप जो तत्व एक अलग रूप ग्रहण करता है, वह अवशेष ही मिट्टी कहलाता है। बक्सर जिले में गंगा, कर्मनाशा, छेर, काव तथा धर्मावती नदी के जलोढ़ से बना है। मिट्टी एक प्राकृतिक संपदा है, जो मानव के लिए बहुत ही उपयोगी है।यह कृषि प्रधान प्रदेश की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संपत्ति है। बक्सर जिला जैसे कृषि प्रधान क्षेत्र के लिए मिट्टी सबसे बड़ा संसाधन मानी जाती है, क्योंकि इसी पर कृषि, पशुपालन तथा प्राकृतिक वनस्पति का विकास निर्भर करता है। वास्तव में बक्सर जिला के खेत की मिट्टी में ही इसकी समृद्धि छिपी हुई है। इस मिट्टी ने सदियों से यहाँ के लोगों का भरण—पोषण किया है। जिले की कृषि नियोजन तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक इसकी मिट्टी, उसकी विशेषताएँ, उसकी उर्वरा शक्ति, मिट्टी अपरदन तथा मिट्टी संरक्षण के बारे में जानकारी नहीं प्राप्त कर ली जाये।

अपवाह तंत्र :—किसी तंत्र से होकर बहने वाली नदियों और शाखाओं को अपवाह तंत्र कहते हैं। नदियों के अपवाह तंत्र वहाँ की जलवायु, स्थलाकृतियों, चट्टानों की संरचना से प्रभावित होती है। बक्सर जिला के अपवाह् तंत्र मुख्य रूप से ध रातल, स्थलाकृति तथा जलवायु से प्रभावित है। इस जिला की नदियाँ मुख्य रूप से पठार से निकल कर गंगा नदी में मिल जाती है। कुछ नदियाँ बरसाती भी हैं। जिससे वर्षा ऋतु में जल भर जाता है फिर सूख जाती है। इस भाग की ढाल पश्चिम से पूर्व तथा दक्षिण से उत्तर दिशा की तरफ है। यहाँ की मुख्य नदियाँ गंगा, कर्मनाशा, कॉव, ठोरा, धर्मावती तथा छेर है।

सिंचाई :—बक्सर जिला में सिंचाई के लिए नहर, तालाब, नलकूप का प्रयोग किया जाता है। यहाँ नहरें और नलकूप सिंचाई के प्रमुख साधन हैं। यहाँ की कुल सिंचित भूमि का लगभग 25 प्रतिशत से अधिक भाग नहरों, लगभग 55 प्रतिशत नलकूपों

तथा अन्य के द्वारा 20 प्रतिशत सिंचाई किया जाता है, जिसमें वर्षा भी सम्मिलित है। जो क्षेत्र वर्षा पर आधारित है वहाँ सिंचाई व्यवस्था नग्ण्य है क्योंकि कोई न कोई समस्या वहाँ बनी रहती है जिसके कारण सिंचाई प्रभावित होती है। गंगा और कर्मनाशा नदी सदा बहती है, मगर ठोरा, छेर तथा धर्मावती नदी ग्रीष्मकाल में सूख जाती है जिससे सिंचाई की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

बक्सर जिला में कृषि—बक्सर कृषि प्रधान जिला है, यहाँ के लोगों की जीविका का मुख्य आधार कृषि ही है। जिले के 80 प्रतिशत भाग पर कृषि की जाती है और 85 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। गंगा के तराई वाले क्षेत्र में भूमि अधिक उपजाऊ है। यह भू—भाग कृषि के लिए बहुत उपयोगी है। जिले में मुख्यतः तीन फसलें उगाई जाती हैं। (1) रबी (2) खरीफ। (3) जायद।

1) रबी की फसल :—यह फसल अक्टूबर—नवम्बर माह में बोयी जाती है, इसे जाड़े की फसल भी कहते हैं। गेंहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों, आलू, राई आदि इस फसल के अन्तर्गत बोई जाने वाली प्रमुख फसलें हैं। मार्च—अप्रैल के महीनों में इसे काट लिया जाता है।

2) खरीफ की फसल :—यह फसल जून—जुलाई माह में बोयी जाती है। और अक्टूबर—नवम्बर माह में काट ली जाती है। इसे वर्षा की फसल भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत धान, गन्ना, तिलहन, ज्वार, बाजरा, मक्का और अरहर मुख्य फसलें हैं।

3) जायदफसलें :—यह फसल मई—जून में बोयी जाती है और जुलाई—अगस्त में काट ली जाती है। इसमें मकई, ज्वार, महुआ मुख्य फसल है जो गंगा के तराई भागों में अधिक उगाई जाती है। जायद भी फसल को गर्मी की फसल या गरमा भी कहते हैं।

कृषि की समस्याएँ—बक्सर जिला एक कृषि प्रधान क्षेत्र है किन्तु यहाँ के अधिकांश कृषक निर्धन हैं, इसका कारण यह है कि इस जिले में कृषि की दशा अच्छी नहीं है और यह अनेक प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं संरचनात्मक समस्याओं के अलावा सिंचाई से भी ग्रस्त है। इस जिले से संबंधित महत्वपूर्ण समस्याएँ निम्नलिखित हैं—

प्राकृतिक समस्याएँ :—इसके अंतर्गत प्राकृतिक आपदा, जल—जमाव क्षेत्र एवं परती तथा कृषि योग्य बंजर भूमि की स्थिति, मिट्टी अपरदन तथा मिट्टी की अत्यधिक उपयोग से संबंधित समस्याएँ आती हैं जैसे प्राकृतिक आपदा, जल—जमाव, परती तथा कृषि योग्य बंजर भूमि, मिट्टी अपरदन, मिट्टी का अत्यधिक उपयोग आदि है।

आर्थिक समस्याएँ :—बक्सर जिला के किसानों की आर्थिक दिशा दयनीय है इसका प्रभाव कृषि पर पड़ता है, यह समस्याएँ निम्न हैं— भूमि पर आधिपत्य में असमानता, निर्धन किसान, अधिक उत्पादन लागत, फसल उत्पादन का कम मूल्य आदि।

सामाजिक समस्याएँ :– इसके तहत निम्न समस्याएँ हैं–कृषि भूमि पर जनसंख्या का बढ़ता बोझ, भूमि–सुधार कार्यक्रमों का अप्रभावशाली क्रियांवयन, तिरस्कार की दृष्टि, शिक्षा की कमी आदि।

संरचनात्मक समस्या :–बक्सर जिला में कृषि से संबंधित अधिसंरचना की कमी है। अधिक उत्पादन के लिए सिंचाई के साधन का विकास हुआ है किन्तु अभी भी इसमें सुधार की आवश्यकता है। रासायनिक खाद्य, उन्नत एवं अधिक उपज देने वाली बीज, ऋण, फसल बीमा इत्यादि का अभाव है। यातायात के साधन, भंडारण तथा व्यवस्थित बाजार के अभाव में बिचौलिये उन का शोषण करते हैं। इन कारणों से यहाँ अलाभप्रद पारंपरिक खेती की जाती है। खेती करने का ढंग पुराना है जिससे प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम होता है तथा जंगली जानवरों द्वारा फसल का नुकसान।

बक्सर जिला में कृषि समस्या का समाधान–बक्सर जिला में कृषि समस्या का समाधान निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा किया जाता सकता है–

1) बक्सर जिले के पांचों नदियों से अधिक नहरें निकालकर तथा नदियों को आपस में जोड़ा जाना चाहिए।
2) बाढ़ से बचने के लिए मजबूत बाँध का निर्माण हो ताकि फसल बर्बाद न हो।
3) प्रत्येक गाँव में कम से कम दो तालाब का निर्माण हो।
4) वर्षा जल संग्रहण करने के उपाय हों।
5) नदियों के किनारे खाली स्थानों पर अधिक मात्रा में वृक्षारोपण हो।
6) कृषक को कृषि उपकरण में सब्सिडरी अधिक से अधिक देने का प्रावधान हो।
7) फसल बीमा लागू हो ताकि उन्हें ज्यादा आर्थिक नुकसान न हो।
8) फसल उत्पादन के बाद कृषक को उचित मूल्य मिल सके, इसके लिए सरकार की तरफ से अच्छी व्यवस्था हो।
9) कृषि से संबंधित पढ़ाई निचले वर्ग से ही हो।
10) किसानों को शिक्षित किया जाए ताकि वे योजनाओं का लाभ ले सकें।
11) मिट्टी जाँच केन्द्र तथा सलाह परामर्श केन्द्र पंचायत स्तर पर हो।
12) कृषि ऋण का घर पहुँच सेवा होना चाहिए।
13) यातायात की पूर्ण व्यवस्था हो।
14) कृषक को वैज्ञानिक तकनीक का प्रशिक्षण हो।
15) सिंचाई की व्यवस्था, बाढ़ तथा सूखा से सुरक्षा का प्रबंध हो।
16) उत्तम बीज, खाद, कीटनाशक दवाओं का समुचित प्रबंध हो।
17) यंत्रिकृत कृषि की दिशा में गाँव में विद्युत पहुँचाया जाए।
18) आधुनिक तकनीकों का प्रयोग और हरित–क्रांति टेक्नोलॉजी (1967–68) का समावेश हो (खासकर खाद्यानों की उपज बढ़ाने के लिए)।

19) कृषि मंडियों की स्थापना प्रखण्ड स्तर पर हो।
20) चकबंदी द्वारा जोतों का एकीकरण (दुर्भाग्यवश बिहार में चकबंदी सफल नहीं हुआ और इस विभाग को सरकार ने बंद कर दिया है)।
21) जंगली जानवरों पर नियंत्रण वन विभाग द्वारा किया जाना चाहिए।

उपसंहार :–उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि बक्सर जिला कृषि प्रधान है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति कृषि प्रधान है जहाँ अधिकतर लोग इससे जुड़े हैं मगर कृषक आर्थिक, सामाजिक, प्राकृतिक, संरचनात्मक समस्या से त्रस्त है, जिसका मूल कारण बढ़ती जनसंख्या है। अगर इस समस्या का समाधान समय रहते नहीं करते हैं तो बक्सर जिला में खाद्यान्न की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। अतः इस समस्या का समाधान ऊपर वर्णित विधि के माध्यम से जल्द से जल्द करना चाहिए। अब जरूरत है बक्सर जिला में सरकार को ध्यान देने की ताकि जो समस्या है उसका समाधान कर कृषि क्षेत्र को मजबूती प्रदान करना ताकि जिला को कृषि क्षेत्र में अग्रणी कर बिहार राज्य तथा अपने देश को कृषि क्षेत्र में अग्रणी कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) अताउल्लाह, डॉ0 मोहम्मद (2008)–बिहार का आधुनिक भूगोल, ब्रिलिएंट प्रकाशन, पटना (बिहार), पृष्ठ सं0 85–86
(2) कृषि विभाग, बक्सर (बिहार) ।
(3) तिवारी, राजेन्द्र (2016)–मैं हूँ बक्सर, न्यूट्रल पब्लिक हाउस पटना (बिहार) पृष्ठ सं0 5
(4) यादव, चन्द्रशेखर (2009)–कृषि भूगोल, आर.के.बुक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 25–30
(5) सिंहा, शंकर (2009)–बिहार का भूगोल, आर.के.बुक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 32–33
(6) शर्मा, डॉ बी.एन.(2016)–बिहार सामान्य ज्ञान, उपकार प्रकाशन, आगरा, (उत्तर प्रदेश), पृष्ठ सं0 28–29
(7) शर्मा, बी.एल. (2012)–कृषि भूगोल, आर.के.बुक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 25–30